नवजा... ...जा सकती हैं।

**प्रेस की स्थापना-** हजारी प्रसाद द्विवेदी ने इस परिवर्तन को रेखांकित करते हुए लिखा है - "वस्तुतः साहित्य में आधुनिकता का वाहन प्रेस है और उसके प्रचार के सहायक हैं, ... प्रेस हो जाने के बाद पुस्तकों के प्रचारित होने का कार्य सहज हो गया और फिर प्रेस के पहले गद्य की बहुत उपयोगिता नहीं थी। प्रेस होने से उसकी उपयोगिता बढ़ गई और विविध विषयों की जानकारी देने वाली पुस्तकें प्रकाशित होने लगीं।" द्विवेदी जी का मानना है कि आगे के हिन्दी साहित्य के लेखन पर भी इसका बड़ा गहरा असर हुआ।

**नये उद्योगों की स्थापना-** अंग्रेज और दूसरे कई यूरोपीय जातियाँ भारत से व्यापार करने के इरादे से यहाँ आई थी। औद्योगिक क्रांति से पहले तक भारत कई मामलों में यूरोप के देशों से उन्नत था और अठारहवीं सदी के मध्य तक भारत में बने हुए मालों का निर्यात ज्यादा होता था। लेकिन 19वीं

सदी में स्थिति में बदलाव आया। यूरोप में जो परिवर्तन हुए उसके कारण भारत अब उनके लिए कच्चा माल खरीदने और इंग्लैण्ड में बना माल बेचने का बड़ा बाज़ार हो गया। इसके लिए उन्होंने योजनाबद्ध ढंग से भारत के परंपरागत उद्योगों को नष्ट किया। उसे कच्चा माल पैदा करने वाले एक पिछड़े देश में बदल दिया। ऐसा करने में उन्हें कामयाबी इसलिए मिल सकी कि वे देश के बड़े हिस्से पर अपना शासन स्थापित करने में सफल रहे थे। इंग्लैण्ड की औद्योगिक क्रांति की कामयाबी के पीछे भारत पर अंके शासन का गहरा योगदान था।

1857 के असफल विद्रोह से पहले ही भारत में आधुनिक उद्योगों की स्थापना होने लगी थी। ब्रिटेन के लिए रुई जैसे कच्चे मालों की अबाध आपूर्ति को पूरा करने के निमित्त भारत में 19 वीं सदी के मध्य में रेलवे की स्थापना की गई जिसके बारे में कार्ल मार्क्स का विचार था कि "रेलवे का प्रादुर्भाव भारत में आधुनिक उद्योगों के आगमन का पूर्वसूचक है।"

Scanned with CamScanner

ब्रिटिश शासनकाल में स्थापित आधुनिक उद्योगों और आवागमन के साधनों के कारण नए वर्गों का जन्म हुआ, जैसे पूंजीपति वर्ग, उद्योग धंधो व यातायात में लगे हुए मजदूरों का वर्ग, खेतिहर मजदूर वर्ग, काश्तकार वर्ग, दस्तकार वर्ग या वणिक वर्ग जो आधुनिक देशी-विदेशी उद्योगों द्वारा उत्पादित पण्य वस्तुओं के क्रय-विक्रय में लगा था। भारत पर ब्रिटिश प्रभाव के कारण न केवल भारत की आर्थिक वरन् सामाजिक संरचना का भी रूपांतरण हुआ। आधुनिक काल को हम भारत में अंग्रेजों के शासन से उत्पन्न स्थितियों के संदर्भ में ही देख और समझ सकते हैं। इसी ने उस संघर्ष को जन्म दिया जिसे हम राष्ट्रीय आंदोलन के नाम से जानते हैं और उस साहित्य को भी जो राष्ट्रीय भावनाओं को व्यक्त करने वाला साहित्य कहा जा सकता है।

- आधुनिक शिक्षा और बौद्धिक वर्ग-

इसी दौर में उस आधुनिक शिक्षा का प्रसार हुआ जिसने राष्ट्रव्यापी और सुधारवादी आंदोलनों पर गहरा असर डाला। भारत में आधुनिक शिक्षा का प्रसार विदेशी ईसाई मिशनरियों, ब्रिटिश सरकार और प्रगतिशील भारतीयों

के प्रयत्न से हुआ। ब्रिटिश सरकार ने अपनी राजनीतिक, आर्थिक और प्रशासनिक जरूरतों के चलते आधुनिक शिक्षा का प्रसार किया। मैकाले जैसे अंग्रेज़ शासकों का विचार था कि अंग्रेजी शिक्षा के द्वारा भारतीयों को पूर्णतः पश्चिमी सभ्यता में रंगा जा सकेगा। और उन्हें सदा के लिए राजभक्त बनाया जा सकेगा। लेकिन अंग्रेज शासकों की यह इच्छा एक हद तक ही पूरी हुई। इस शिक्षा ने एक सीमा तक ही भारतीयों को पश्चिमी सभ्यता के विकृत रूपों में रंगा, उन्हें अंग्रेजों जैसा बनने की प्रेरणा भी दी। लेकिन यह शिक्षा धर्मनिरपेक्ष, उदारवादी और ब्रिटिश शासन से पहले की शिक्षा पद्धति के विपरीत जाति और धर्म का ख्याल किए बिना सर्वसुलभ थी।

इस आधुनिक शिक्षा ने उस बुद्धिजीवी वर्ग को पैदा किया जिसने राष्ट्रीय और समाज सुधार आंदोलन में न सिर्फ महत्वपूर्ण भूमिका निभाई बल्कि उसका नेतृत्व किया। उन्होंने "राष्ट्रीयता और जनतंत्र की भावनाओं से ओत-प्रोत संपन्न प्रादेशिक साहित्य और संस्कृति की सृष्टि की। इसके बीच से महान वैज्ञानिक, कवि, इतिहासज्ञ, समाजशास्त्री साहित्यिक, दार्शनिक और अर्थशास्त्री उत्पन्न हुए।

Scanned with CamScanner

प्रगतिशील बुद्धिजीवी वर्ग ने आधुनिक पाश्चात्य जनतांत्रिक संस्कृति का स्वांगीकरण किया और नवजात भारतीय राष्ट्र की जटिल समस्याओं को समझा।" उन्नीसवीं सदी मध्य में सामने आने वाले हिन्दी लेखकों का संबंध इसी बुद्धिजीवी वर्ग से था।

**ब्रिटिश राजसत्ता से असंतोष -**

1857 के विद्रोह की असफलता ने सामंती ~~समाज~~ शासन की पुनः स्थापना का विकल्प हमेशा के लिए खत्म कर दिया था। लेकिन इसी दौर में परिस्थितियाँ नये ढंग से सामने आ रही थी। जिसने 1870 के बाद नये राजनीतिक उभार को जन्म दिया और जिसकी परिणिति 1885 में कांग्रेस की स्थापना हुई। राष्ट्रीय असंतोष की जिस भावना को इस दौर में W. C Banerjee, आर० सी० दत्त, दादा भाई नैरोजी, जस्टिस रानाडे, गोपाल कृष्ण गोखले आदि व्यक्त कर रहे थे, उसी असंतोष को अपने ढंग से भारतेंदु युग के लेखक भी हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से व्यक्त कर रहे थे।

राष्ट्रीय असंतोष को व्यक्त करने वाले इस प्रबुद्ध वर्ग के सामने यह साफ नहीं था कि वे देश को ब्रिटिश दासता से मुक्त करना चाहते हैं, बल्कि इसके विपरीत

Scanned with CamScanner

वे ब्रिटिश शासन को दैवीय वरदान मानते थे। वे देशोपकार और देशोन्नति की बात करते हुए कई अंतर्विरोधी भावनाओं से ग्रस्त थे। वे देशोन्नति की बात भी करते थे और महारानी विक्टोरिया के 'सुशासन' का जयनाद भी करते थे। वे समाज सुधार का पक्ष लेते थे, लेकिन उनमें से कई प्राचीन भारतीय संस्कृति की श्रेष्ठता की अवधारणा से अभिभूत भी थे। वर्ण व्यवस्था उन्हें अनुचित लगती थी और मानव ~~समता~~ समानता के आदर्श को वे स्वीकारने लगे थे, लेकिन उनमें से कई ब्राह्मण श्रेष्ठता, गो रक्षा और मुस्लिम द्वेष के विचारों से भी पूरी तरह मुक्त नहीं हो पाए थे। इस द्वंद्व के बीच ही इस आधुनिक दौर के हिन्दी लेखन की शुरुआत होती है।

## ↔ हिन्दी भाषा और गद्य का उदय-

'हिन्दी साहित्य का इतिहास' नामक अपनी पुस्तक में रामचंद्र शुक्ल आधुनिक काल की शुरुआत गद्य के विकास का परिचय देने से करते हैं। खड़ी बोली का गद्य उस समय उर्दू के रूप में भी मौजूद था और हिन्दी के रूप में भी। उर्दू के रूप में खड़ी बोली फारसी लिपि के संशोधित रूप में लिखी जाकर

Scanned with CamScanner

और फारसी - अरबी के शब्दों के बाहुल्य के साथ मौजूद थी और उसमें काव्य और गद्य दोनों लिखे जा रहे थे।

धीरे - धीरे यह खड़ी बोली व्यवहार की सामान्य शिष्ट भाषा हो गई। जिस समय अंग्रेजी राज्य भारत में प्रतिष्ठित हुआ उस समय सारे उत्तरी भारत में खड़ी बोली व्यवहार की शिष्ट भाषा हो चुकी थी।

## समाज सुधार और स्त्री - स्वातंत्र्य -

उन्नीसवीं सदी में समाजोन्नति के सवाल को हम स्त्री के संदर्भ में लेखकों और समाज सुधारकों की भूमिका में समझ सकते हैं। समाज सुधार के संबंध में तीन इच्छाएं व्यक्त की - 1- विधवा विवाह का प्रचलन

2- विदेश यात्रा पर रोक हटे

3- जाति - पाँति का झगड़ा मिटे

इन तीनों का संबंध सिर्फ समाज सुधार से ही नहीं था, देश की उन्नति से भी था।

## देशभक्ति और राष्ट्रवाद का विकास -

भारतेन्दु की प्रसिद्ध पंक्तियाँ हैं :

'अंग्रेज राज सुख साज सजे सब भारी।
पै धन विदेश चलि जात इहै अति ख्वारी ।।'

को इस छंद के संदर्भ

उन्नीसवीं सदी की देशभक्ति